एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मिर्च के प्रमुख कीट एवं उनका नियंत्रण

(*देवेश परमार एवं लक्ष्मण सिंह सैनी)
[1]राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्यौगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)
[2]श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: 0909deveshparmar@gmail.com

मिर्च यह भारत की मसाले और सब्जी की महत्वपूर्ण फसल हैं। यह एक नकदी फसल है जिसकी व्यवसायिक खेती करके किसान ज्यादा मुनाफा कमा सकता हैं। मिर्च गर्म मौसम की फसल है। जहॉ वार्षिक वर्षा 60 से 150 सेमी. हो वहा इसकी सफल खेती की जा सकती हैं। मिर्च को कड़ी, अचार, चटनी और अन्य सब्जीयों में मुख्य रूप से उपयोग किया जाता हैं। मिर्च मे तिखापन केप्सेसिन के कारण तथा लाल रंग केप्सेथिन के कारण होता हैं। मिर्च का मूल उत्पत्ति स्थान मेक्सिको माना जाता हैं। मिर्च मे कई औषधिये गुण पाये जाते है। जो विभिन्न प्रकार की दवाइयॉ बनाने मे उपयोग होता हैं। मुख्य रूप से मिर्च मे केंसर रोधी गुण पाया जाता हैं। साथ ही तुरन्त दर्द दुर करने का गुण पाया जाता है। मिर्च खून को पतला करने मे सहायता करती हैं। साथ ही साथ दिल की बिमारियॉ को रोकने में मदद करती हैं। इसका उपयोग ताजा, सूखे व पाउडर तीनो रुप में किया जाता हैं। इसमें विटामिन ए व सी दोनो पाये जाते हैं। भारत विश्व में मिर्च उत्पादन करने वाले देशो मे प्रमुख देश हैं। भारत मे मुख्य रूप से आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, बिहार, उत्तर प्रदेश और राजस्थान मिर्च उत्पादन करने वाले प्रमुख राज्य हैं। मिर्च की अच्छी पैदावार लेने के लिये मृदा में उपस्थित पौषक तत्वो की जॉच करवा कर उचित मात्रा में उर्वरको का प्रयोग कर अच्छा उत्पादन प्राप्त कीया जा सकता हैं। फसल की कम उत्पादकता एवं उत्पादन के लिये अनेक कारक जिम्मेदार होते है जिसमे कीटो द्वारा होने वाली हानि का अत्यन्त महत्वपुर्ण स्थान है। तथा समय पर इन कीटो की रोकथाम नही करने से कीसानो को काफी नुकसान हो सकता है।

मिर्च के प्रमुख कीट एवं उनका नियंत्रण

मिर्च के रस चूसक कीट

1.सफेद मक्खी-इस कीट के सुण्डी व वयस्क दोनो पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते हैं। यह कीट पर्ण कूंचन रोग का वाहक होता हैं। कीट इस रोग को एक पौधे से दुसरे पौधे मे फैलाते हैं।

2. माहू- यह कीट पत्तियों एवं पौधो के अन्य कोमल भागों से रस चूसकर पत्तियों व कोमल भागों पर मधुरस का स्त्राव करते हैं व बाद मे फल काले पड़ जाते हैं यह कीट मोजेक रोग का प्रसार करते है।

3. हरा तेला- यह कीट पौधे की पत्तियां एवं अन्य मुलायम भागो से रस चूसते हैं। इस कीट का प्रकोप पौधे की रूपाई के 2 या 3 सप्ताह बाद शुरु होता हैं और पौधे की पत्तियां सिकुड़ कर उपर की ओर मुड़ जाती है यह कीट पौधे के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालते है।

सफेद मक्खी	माहू	हरा तेला

रस चूसक कीटो का प्रभावी नियंत्रण

1. फसल के अवशेषो को एकत्रित करके उन्हे नष्ट कर देना चाहिए।
2. नत्रजन युक्त उर्वरको का उपयोग सन्तुलित मात्रा मे करना चाहिए ताकि रस चूसक कीटो का प्रकोप को कम किया जा सकता है।
3. खेत मे प्रकाश प्रपंच का उपयोग शाम को 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक करना चाहिए क्योकी इस समय कीटो का प्रकोप अधिक रहता है।
4. इन कीटो का प्रारम्भिक अवस्था मे नियंत्रण करने के लिये 5 मिली. प्रति लीटर पानी मे नीम तेल का घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।
5. डायमिथोएट 30 ईसी. (**रोघोर**) 1 मिली. प्रति लीटर पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।
6. इमिडाक्लोरप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल. (**कोन्फीडोर**) 3.5 मिली. प्रति 10 लीटर पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।
7. एसिफेट 75 प्रतिशत एस.पी. (**लान्सर**) का छिड़काव करना चाहिए।

अन्य कीट

1. फल छेदक-इस कीट की सुण्डी मिर्च के फलो मे छेद करके अन्दर से फलो को खा जाती है तथा फलो की गुणवत्ता को खराब कर देती है। इसके फलस्वरुप मिर्च के फल पौधे से अलग होकर निचे गिर जाते है।

नियंत्रण के उपाय

1. फसल के अवशेषो को एकत्रित करके उन्हे नष्ट कर देना चाहिए।
2. खेत मे प्रकाश प्रपंच का उपयोग शाम को 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक करना चाहिए क्योकी इस समय कीटो का प्रकोप अधिक रहता है।
3. इस कीट का प्रारम्भिक अवस्था मे नियंत्रण करने के लिये 5 मिली. प्रति लीटर पानी मे नीम तेल का घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।
4. स्पाइनोसेड 4 मिली. या इण्डोक्साकार्ब 1 मिली. प्रति लीटर पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।
5. फली छेदक जैसे कीट से बचाव के लिये *NPV* 250 LE को 250 लीटर पानी के साथ मिलाकर 10 से 15 दिन के अन्तराल पर छीड़काव करना चाहिए।

2. सफेद लट-इस कीट की सुण्डी फसलो के लिये बहुत ही हानि कारक होती है। इस कीट की मादा पहली बारिश के समय जमीन मे अण्डे दे देती है जिससे ग्रब निकलते है जो की पौधो की जड़ो को खाते है। इस कीट से ग्रसित पौधे कुछ समय बाद सूखकर नष्ट हो जाते है।

नियंत्रण के उपाय

1. गर्मियो के समय खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए।
2. अच्छी तरह से सड़ी गली हुई गोबर की खाद का प्रयोग करना चाहिए।
3. परजीवी ततैया इस कीट को नियंत्रण करने मे मदद करते है।
4. फसल की बुआई के 15 दिन पुर्व खेत मे 1000 किग्रा. नीम की खली प्रति हेक्टयर के हिसाब से खेत मे मिला देनी चाहिए।
5. बुआई से पुर्व फोरेट 10 जी. या कार्बाफ्युरॉन 3 जी. 20 से 25 किग्रा. प्रति हेक्टयर के हिसाब से खेत मे डालनी चाहिए।